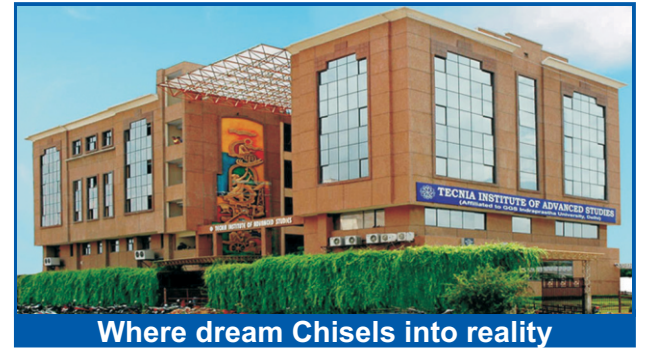


Youngster



YOUNGSTER • ESTABLISHED 2004 • NEW DELHI • APRIL 2022 • PAGES 4 • PRICE 1/- • MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

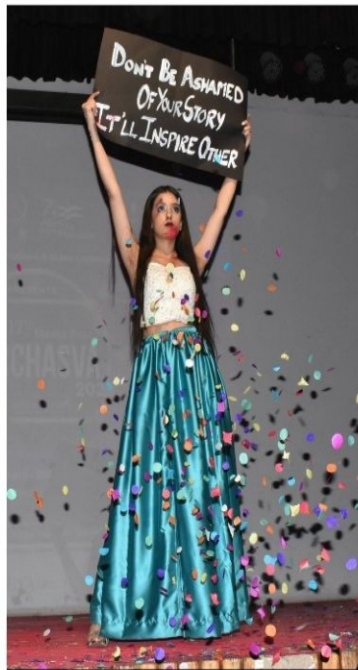
धूमधाम से संपन्न हुआ टेक्निया का मीडिया फेस्ट "वर्चस्व कर्टन रेज़र" 2022

टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज, रोहिणी, नई दिल्ली में एक दिवसीय मीडिया फेस्ट "वर्चस्व कर्टन रेज़र" धूमधाम से संपन्न हुआ। वर्चस्व मीडिया फेस्ट, टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज की एक रचनात्मक पहल है जिसमें संस्थान के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के छात्र-छात्राएं अपने ज्ञान और रचनात्मक कौशल का प्रदर्शन करते हैं। पिछले 16 साल से संस्थान ने सफल आयोजन के साथ कुछ अलग करने की प्रथा को कायम रखा है उसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए इस साल भी वर्चस्व ने कुछ अलग अंदाज में नई ऊँचाईयों को छूआ। मीडिया फेस्ट वर्चस्व कर्टन रेज़र की थीम "आजादी का अमृत महोत्सव" को ध्यान में रखकर निर्धारित की गयी थी जो सफल, सुदृढ़, स्वस्थ और स्वतंत्र भारत के लिए आवश्यक है। कार्यक्रम की शुरुवात टेक्निया ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशन के अध्यक्ष डॉ राम कैलाश गुप्ता, संस्थान के

निदेशक डॉ अजय कुमार, डॉ एम एन झा (डीन, बीएजेएमसी) और १० वर्चस्व कर्टन रेज़र 2022 के संयोजिका डॉ जागृति बसेरा द्वारा सरस्वती वंदना व दीप प्रज्ज्वलन के साथ की गयी।

डॉ राम कैलाश गुप्ता ने कार्यक्रम की औपचारिक शुरुवात करते हुए अपने अभिभाषण में छात्रों को कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभकामना देते हुए उन्हें प्रेरित किया व अपने युवा जीवन की कुछ मजेदार घटनाओं को साझाकर उत्साहवर्धन किया। "वर्चस्व कर्टन रेज़र 2022" में 12 प्रकार के ईवेंट हुए और उसमें दिल्ली एन.सी.आर के 40 से अधिक कॉलेजों के विद्यार्थियों ने भाग लिया और अपनी कला का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में मुख्य आकर्षण फैशन परेड, ग्रुप डांस, सोलो डांस, सोलो सिंगिंग, एड-मैड, नुक्कड़ नाटक, रचनात्मक लेखन, फोटोग्राफी, रैप बैटल, मिस्टर एंड मिस वर्चस्व आदि रहें।

इस बार वर्चस्व कर्टन रेज़र 2022 का अपना अलग ही अंदाज था जहां टेक्निया के छात्रों के बैंड ने जलवा बिखेरते हुए सुरीले गीतों से उपस्थित युवाओं को झुमने पर मजबूर कर दिया। वहीं भारी संख्या में दर्शकों की उपस्थिति ने कार्यक्रम के उत्साह को दोगुना कर दिया। कार्यक्रम के समापन समारोह में विजेताओं, प्रतिभागियों को ट्राफी और प्रमाण पत्र दिए गए। इस मौके पर जनसंचार विभाग के विभागाध्यक्ष (द्वितीय सत्र) डॉ विपुल प्रताप, डॉ शिवेंद्रु राय (विभागाध्यक्ष, प्रथम सत्र), प्रोफेसर राजेश अग्रवाल, डॉ गोपाल ठाकुर, डॉ रजनेश पांडे, डॉ शील निधि त्रिपाठी, डॉ केशव पटेल, डॉ शाहीन बानो, मंयक अरोड़ा, रितिका चौधरी, प्रियंका सिंह, अंशुला गर्ग, प्रेस एंड मीडिया क्लब के बालकृष्ण मिश्र, कर्ण सिंह व छात्र-छात्राएं मौजूद रहें।



लू से बचने के लिए आजमाएं ये घरेलू उपाय

हर बढ़ते दिन के साथ गर्मी का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। देश के कई हिस्सों में तापमान रिकॉर्ड तोड़ रहा है। गर्मियों के मौसम में तापमान बढ़ने की वजह से लोगों को लू लगने या फिर हीट स्ट्रोक की समस्या झेलनी पड़ती है। आमतौर पर मई-जून के महीने में हीट स्ट्रोक के मामलों में बढ़ोतरी देखी जाती है। इस मौसम में यह समस्या आम है, लेकिन समय पर ध्यान नहीं देने की वजह से यह जानलेवा भी हो सकती है। इसलिए इस समस्या से अपना बचाव करना बेहद जरूरी है। आज हम आपको कुछ घरेलू उपाय बताएंगे जिनकी मदद से आप खुद सुरक्षित रख पाएंगे।

अचानक ठंडी या गर्म जगह पर जाने से बचें

गर्मियों के मौसम में हीट स्ट्रोक से बचने के लिए लोगों को अचानक ठंडी या गर्म जगह पर जाने से बचना चाहिए। अगर आप घर पर एसी या कूलर में बैठे हुए हैं और अचानक से धूप के सपर्क में आते हैं तो हीट स्ट्रोक की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए बाहर जाने से पहले



अपने शरीर के तापमान को सामान्य करें ताकि हीट स्ट्रोक का खतरा कम हो जाए। ऐसा ही बाहर से आने के बाद करें। बाहर से आने के तुरंत बाद एसी या कूलर के सामने न बैठें। खूब सारा पानी पिएं गर्मियों के मौसम में शरीर का तापमान बढ़ने की वजह से बहुत सारा पसीना निकलता है।

शरीर में पानी की कमी होने की वजह से डिहाइड्रेशन हो जाता है और इससे हीट स्ट्रोक का खतरा भी बढ़ जाता है। इसलिए हीट स्ट्रोक से खुद को बचाने के लिए खूब सारा पानी पिएं। अगर इस मौसम में बाहर धूप में निकल रहे हैं तो आप नारियल पानी, नींबू पानी का भी सेवन कर सकते हैं। डाइट का ध्यान रखना बेहद जरूरी है

गर्मियों के मौसम में हीट स्ट्रोक से खुद को बचाना चाहते हैं तो अपनी डाइट पर जरूर ध्यान दें। इस मौसम में ऐसी चीजों का सेवन करें जो शरीर में पानी की मात्रा बनाए रखते हैं। इसके अलावा हल्के और कम मसाले वाले खाने का सेवन करें। डाइट का ध्यान रखने से हीट स्ट्रोक का खतरा कम होता है।

मेरी माँ

प्यार बेशर्त भर दिया होता कोई माँ जैसा दिल दिया होता चोट हमें लगती है

आंखें नम उसकी हो जाती है प्यार बेशर्त भर दिया होता कोई माँ जैसा दिल दिया होता

हर मुश्किल में साथ देती है जी हॉ ! माँ ऐसी ही होती है प्यार बेशर्त भर दिया होता कोई माँ जैसा दिल दिया होता दिल हमारा रोता, दर्द महसूस उसे होता

काश, काश कोई उसके भी दिल की बात समझ पाया होता प्यार बेशर्त भर दिया होता कोई माँ जैसा दिल दिया होता

जिंदगी भी कभी मुँह मोड़ती पर माँ कभी न साथ छोड़ती प्यार बेशर्त भर दिया होता

कोई माँ जैसा दिल दिया होता वो बचपन की बात थी जब माँ हमारी गलतियों पे हमें डाँटती और मारती थी

लेकिन आज वो समझती और सही राह दिखाती है प्यार बेशर्त भर दिया होता

कोई माँ जैसा दिल दिया होता माँ होती है सबसे प्यारी ना देखी कभी ऐसी दोस्ती यारी प्यार बेशर्त भर दिया होता कोई माँ जैसा दिल दिया होता

— चाहत दरयानी, बीएजेएमसी, प्रथम वर्ष

वार्षिक पौधरोपण अभियान

ऑक्सिजन— इंसान हो या जानवर किसी का भी इसके बिना जीना नामुमकिन है लेकिन जहाँ से हमें यह मिलता है यानि पेड़ उसकी कमी विश्वभर में है। दुनिया आधुनिकरण के पीछे प्रकृति को भूल चुकी है। दिल्ली सरकार ने इसी कमी को पूरा करने के लिए वर्ष 2022-23 के वार्षिक पौधरोपण अभियान के दौरान 35.38 लाख पौधे रोपने का लक्ष्य रखा है। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री— गोपाल राय ने इसके लिए एक हेल्पलाइन नंबर 1800118600 की भी शुरुवात की है।

इस हेल्पलाइन नंबर पर आर. डब्ल्यू.ए(रेसिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन टू एक ऐसा स्मूह जो कि सोसाइटी में रहता है और वहाँ रहकर सोसाइटी के मेंटेनेंस को देखता है।), गैर-सरकारी संगठन और सामान्य नागरिक जो इस अभियान से जुड़ना चाहते हैं अपना पंजीकरण या रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं और इस अभियान से जुड़ सकते हैं। इस अभियान की शुरुआत



जुलाई 2022 से होगी। पेड़ केवल हमें ऑक्सिजन नहीं देते बल्कि दिन- प्रतिदिन में काम आने वाली वस्तुएँ भी हमें पेड़ों से ही प्राप्त होती है जैसे पेंसिल और अनेक चीजें हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार एक व्यक्ति अपने

कर सकेंगे।

.रुनाली, बी.ए.(जे.एम.सी.)

जीवनकाल में लगभग 61 पेड़ों का इस्तेमाल करता है। 2021 में कोरोना महामारी के चलते ऑक्सिजन की कमी के कारण हजारों और लाखों लोगों की मृत्यु हो गई थी लेकिन अगर पेड़ों की कमी को इसी तरह हम नज़र अंदाज करते रहे तो बिना किसी महामारी के लोगों की मृत्यु हो सकती है।

इंडिया स्टेट ऑफ फॉरेस्ट के अनुसार दिल्ली में पिछले दो वर्षों में दिल्ली को हरित क्षेत्र 21.88 प्रतिशत से बढ़कर 23.06 प्रतिशत हो गया है। आँकड़ा भले ही कम है, लेकिन जिस प्रकार बूँद-बूँद से ही सागर बनता है उसी प्रकार सबके प्रयास से हम पेड़ों की कमी को भी पूरा

DOPAMINE DETOX

Before knowing the “Dopamine Detox”, we have to know more about what actually dopamine is? Dopamine is a chemical released in the brain that makes you feel good, dopamine is responsible for allowing you to feel pleasure, satisfaction and motivation. When you achieve something, you feel good. It's because you have a surge of dopamine in the brain. But people have started craving for dopamine 'reward' excessively, now more than ever, which is caused by many pleasant experiences, including eating junk food, winning a game, earning money, alcohol and much more. Many illegal drugs cause a surge of dopamine which is partly why people get addicted to them. Having low level of dopamine can make you less motivated and less excited about things. Having too much of dopamine or too much consumption of dopamine, concentrated in some parts of the brain and not enough to other parts is linked with being more competitive, aggressive and having poor impulse control. Now more into the details of this topic, social media is the biggest reason that dopamine detox has become more famous these days. With the decrease in the attention span of social media junkies, the popularity of short video has been

steadily increasing. Instagram created its short video feature called Reels and other platforms have entered this market. After attention, these platforms target the reward system of the users. Our brain feels rewarded when an action or behaviour gives us pleasure. The internal rewarded system is triggered by a neurotransmitter called dopamine. So, dopamine creates a feedback loop that pushes individual to redo that action that gave them pleasure. So, when a user doesn't like the video, they will scroll to achieve the desired reward. Continuous use of social media platforms has already caused a decrease in the attention span of an average human being, this decline will continue with further consumption. The internet users may think these short videos are harmless but they can lead to several problems. Yes, it is difficult to stay away from these platforms but we must final away to detox, disconnect and reconnect with the real world, talk to your loved ones, read a book or go for a walk and understand that there is an entire world outside that 6-inch screen. Limit your dopamine intake, be mindful about what you watch on the internet & how much time you waste craving for that one more hit of dopamine. Research more on this topic to get full knowledge.

-Shreya gunsola, BA(JMC)

BASICS OF MEDIA

Control Room. A room adjacent to the studio in which the director, the technical director, the audio engineer, and sometimes the lighting director perform their various production functions

Master Control . Nerve center for all telecasts. Controls the program input, storage, and retrieval for on-the-air telecasts. Also oversees technical quality of all program material.

Broadband: A high-bandwidth standard for sending information (voice, data, video, and audio) simultaneously over fiber-optic cables

Grayscale: A scale indicating intermediate steps from TV white to TV black. Usually measured with a nine- or seven-step scale.

Demographics: Audience research factors concerned with such data as age, gender, marital status, and income.

Process Message: The message actually received by the viewer in the process of watching a television program.

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Parul Arora



संपादक की कलम से

Food insecurity and Hunger

“There are people in the world so hungry, that God cannot appear to them except in the form of bread.” — Mahatma Gandhi

Hunger is generally understood as an unpleasant or painful sensation caused by inadequate intake of food energy. Starvation is scientifically called food shortage. It is strongly associated with poverty and involves interactions between a range of social, political, demographic and social factors. People living in poverty often face household food insecurity, engage in inadequate long-term care practices, have little access to quality water, sanitation and sanitation, and access to health services and education. And live in a dangerous environment with poor availability. All of these contribute to hunger.

Every night, one out of seven people on the planet go to bed hungry. As the Covid19 pandemic has exacerbated the poverty and hunger crisis, the situation in India looks particularly grim. In the Global Hunger Index released last week, India slipped seven places to a rank of 101 from 94 in just year. The index gives a score on a 100point scale, where 0 indicates no hunger and 100 shows an “extremely alarming” situation. With a score of 27.5, the level of hunger in India is “serious”. The index uses four key parameters to calculate the global score. These include malnutrition, child exhaustion (children under 5 years old and short stature), child stunting (children under 5 years old and younger), and child mortality (children under 5 years old death).

There are two main types of hunger. The first is open (or raw) Need to fill the stomach on an empty stomach or every few hours. Simply put, hunger I want to eat food. It is also sometimes called self-reported hunger, which causes people to assess their own ability to meet the physiological urge to satisfy their hunger. The

second type of hunger occurs when the human body becomes accustomed to eating less food. More than what you need for healthy development, and after a while you don't need any more food. If people have always eaten less than their needs, their bodies adjust to less food in what is known as bio stasis. It is also possible to fill up the stomach with no nutritious food, which does not provide the required calories or micronutrients like vitamins, iron, iodine, zinc, and calcium that are required in tiny amounts. Another situation could be when the essential calories, proteins, fats and micronutrients are not absorbed in the body due to ill health and poor hygiene. In all such cases hunger is not articulated.

India has achieved remarkable economic growth and, despite progress, continues to be the home of the world's most malnourished children. Malnutrition in children can be divided into "under nutrition" (insufficient calorie intake) and "over nutrition" (excessive calorie intake). Of these, malnutrition leads to reduced feed height or growth retardation. Unlike weight loss, it is difficult to recover height and is known as the worst form of malnutrition in children. Therefore, it is an indicator of chronic malnutrition in children and can lead to irreversible mental and physical damage that will be passed on to the next generation. To understand the seriousness of this problem, please note that one-third of the underdeveloped children in the world are Indian. What that means is that India loses 4% of its GDP (gross domestic product) each year and therefore cannot reach its economic development goals without addressing the problem of malnutrition in children. According to the survey, tackling malnutrition in children requires a multifaceted approach, including quantity and quality of food

intake, hygiene levels, maternal health and education, and access to social safety net programs. Is suggested. Established programs such as the Integrated Child Development Service (ICDS), which provides comprehensive health and nutritional services to children under the age of 6 and pregnant and lactating mothers, lunch meals for school children, and the Swachh Bharat Mission. Open the stool and offer other programs.

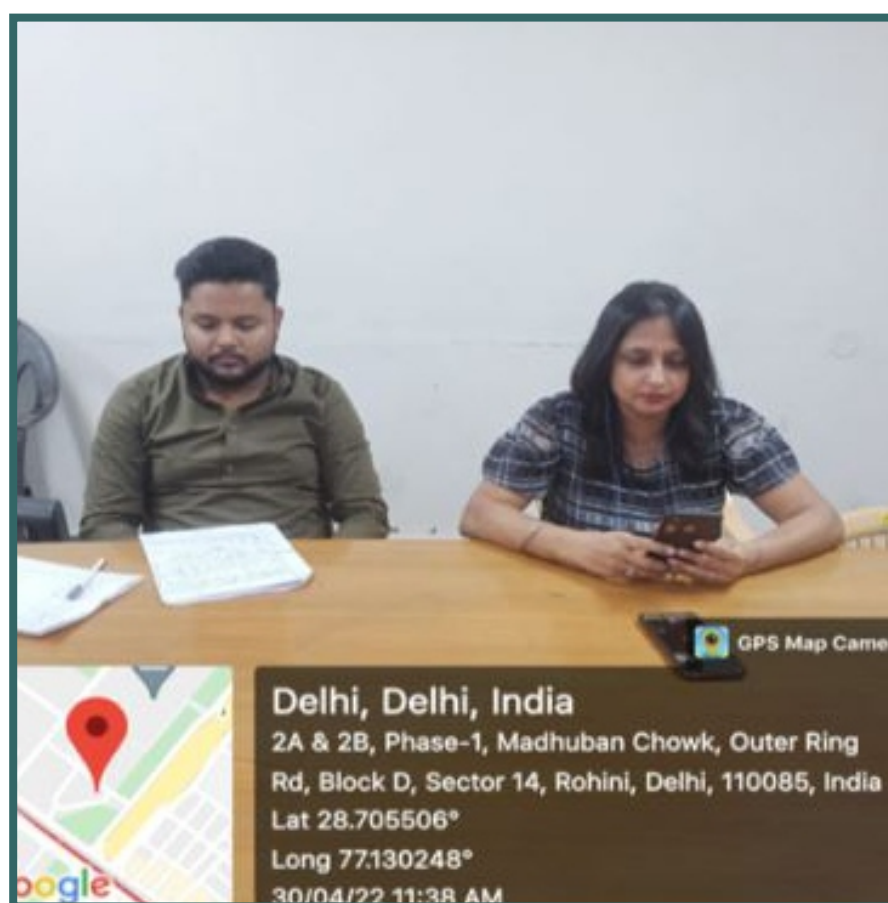
A person is food insecure when they lack regular access to enough safe and nutritious food for normal growth and development and an active and healthy life. This may be due to unavailability of food and/or lack of resources to obtain food. Food insecurity can be experienced at different levels of severity. FAO measures food insecurity using the Food Insecurity Experience Scale (FIES) Hunger affects millions of children around the world. Sub-Saharan Africa and South Asia are the most affected regions, but food insecurity is also common in developed countries. Starvation affects the physical and cognitive development of prenatal, perinatal, and early childhood, some of which lasts into adolescence and adulthood. Physical effects of hunger include malnutrition, stunting, exhaustion, preterm birth, low birth weight and, in extreme cases, child mortality. Other effects include poor health, physical symptoms such as abdominal pain and headaches, signs of anxiety, anxiety, and behavioural problems. Food insecurity and hunger have been constants throughout history. During times such as the Great Depression, the government has stepped up in an effort to help those suffering.

-Ronica, BA(JMC)

National Webinar on Awareness of Library Services and Open Resources

A National webinar was successfully organized on 30th April 2022 at Ashtavakra Institute of Rehabilitation Sciences and Research on the topic of “Awareness of Library Services And Open Resources” by the AIRSR Library Professionals. Dr. Anil Jharotia and Dr. Dharmendra Harit were the resource persons in webinar. In the beginning, Ms Aashi Rastogi and Mr. Puru Gola, Head Librarian and Co-Convener of the webinar welcomed the guest and introduced to the attendees. The guest speaker Dr. Anil Kumar Jharotia, (Librarian of

Tecnia Institute of Advanced Studies) described about better library services for users. He said that Library is the heart of an institute so library staff should provide best library services to students as well faculty members. Dr. Dharmendra Harit (Librarian of Dr Akhilesh Das Gupta Institute of



Technology & Management) talked about Open Resources. He described about National Digital Library of India and other open access

resources for users.

The webinar was attended by more than 100 attendees comprising of students, faculty and library professionals from different colleges. The webinar ended with a vote of thank. On this occasion all the faculty and students were present.

-Youngster Bureau

Tias and Mission Jan Jagriti Jointly organized Blood Donation Camp

Tecnia Institute of Advanced Studies organized a blood donation camp in collaboration with "Mission Jan Jagriti" on 20th April, 2020 at Multipurpose Hall of TIAS campus. The Camp was inaugurated by Dr N K Bhatia, President, Mission Jan Jagriti, Dr. Ajay Kumar, Director, Tecnia Institute of Advanced Studies, Dr M N Jha, Dean, Tecnia Institute of Advanced Studies and Ms Vaishali Prasad, NSS Programme Officer, TIAS. In this camp overwhelming number of Volunteers of different departments has participated with Vivacity. The blood donors were given Biscuits, Juices and Coffee Mugs after donating the blood in order to reenergize themselves. The blood donors were provided with a blood donation certificate card by Mission Jan Jagriti with one year validity. Seven Volunteers of rarest blood group have donated the blood in camp and 60 volunteers have participated for blood donation.

The main aim of the event was to create awareness among students of BJMC, MBA, BBA and BCA about



the donation of blood and how it can help other person in need. We got a good response with a good number of students participating in the event. Mr Bhupendra Singh, Head, Mission Jan Jagriti appreciated the efforts of the institute. The event concluded with a happening and cheerful remark. The

Volunteer students were awarded with certificates and refreshment by Mission Jan Jagriti. At the end, vote of thanks was extended by Dr. Ruchi Srivastava, Event Incharge and Ms Vaishali, NSS Programme Officer.

-Youngster Bureau

IMPORTANT QUOTES

"The opposite of a correct statement is a false statement. The opposite of a profound truth may well be another profound truth."

Niels Bohr

...

"In science one tries to tell people, in such a way as to be understood by everyone, something that no one ever knew before. But in poetry, it's the exact opposite."

Paul Dirac

...

"Anyone who considers arithmetical methods of producing random digits is, of course, in a state of sin."

John von Neumann

...

"It is unbecoming for young men to utter maxims."

Aristotle

...

"Grove giveth and Gates taketh away."

Bob Metcalfe

...

Compilation:

Vinayak

WINNERS v/s LOOSERS

Part-90

Winners use hard arguments but soft words; Losers use soft arguments but hard words.

...

Winners stand firm on values but compromise on petty things; Losers stand firm on petty things but compromise on values.

...

Winners follow the philosophy of empathy: "Don't do to others what you would, not want them to do to you"; Losers follow the philosophy, "Do it to others before they do it to you."

...

Winners make it happen; Losers let it happen.

...

The Winner is always part of the answer; The Loser is always part of the problem.

...

The Winner always has a program; The Loser always has an excuse.

...

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Anamika Pandey

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: youngstertias@gmail.com

खूबसूरती और सफाई के लिए मशहूर हैं ये हिल स्टेशन

हम जब भी गर्मियों में घूमने का प्लान बनाते हैं तो हमारे दिमाग में सबसे पहला नाम है स्टेशन का आता है। वैसे तो देश में कई खूबसूरत हिल स्टेशन हैं लेकिन पिछले कुछ समय में इन जगहों पर स्वच्छता की कमी देखी गई है। हर कोई चाहता है कि वह साफ सुथरी जगह पर रहे। लेकिन उस जगह की साफ सफाई का ध्यान भी हमें ही रखना होता है। आज के इस लेख में हम आपको कुछ ऐसे हिल स्टेशन के बारे में बताने जा रहे हैं जो अपनी स्वच्छता के लिए मशहूर हैं

दृ तवांग, अरुणाचल प्रदेश

अरुणाचल प्रदेश से लगभग 3048 मीटर की ऊँचाई पर स्थित तवांग एक बेहद खूबसूरत और स्वच्छ हिल स्टेशन है। यह जगह अपनी सुंदर मठों और 6वें दलाई लामा त्सांगयांग ग्यात्सो किस जन्म स्थान के रूप में प्रसिद्ध है। तवांग शहर को दवांग के नाम से भी जाना जाता है। यह बौद्धों के लिए सबसे पवित्र जगहों में से एक है। सबसे खास बात यह है कि इस स्टेशन पर घूमते हुए आपको कहीं भी गंदगी नहीं दिखेगी।

कौसानी, उत्तराखंड

उत्तराखंड के बागेश्वर जिले में स्थित कौसानी एक खूबसूरत हिल स्टेशन है। यहां से हिमालय की चोटियां बेहद खूबसूरत नजर आती हैं। चीड़ के पेड़ों के जंगल और खूबसूरत वादियों से घिरा यह हिल स्टेशन आपको मंत्रमुग्ध कर देगा। कौसानी में सर्दियों के महीनों में बर्फबारी होती है, जिसका मजा उठाने के लिए बड़ी संख्या में पर्यटक यहां आते हैं।

यहां की प्राकृतिक खूबसूरती और स्वच्छ वातावरण आपका मन मोह लेंगे। इंदुवकी, केरल
इंदुवकी, केरल के



सबसे खूबसूरत हिल स्टेशन में से एक है। यहां के आधी से ज्यादा जगह जंगलों से घिरी हुई है। यह जगह खूबसूरत वन्यजीव अभ्यारण्यों, जंगलों और रबर के बागानों के लिए प्रसिद्ध है। इंदुवकी में 650 फीट लंबा और 550 फीट ऊंचा मेहराबादार बांध है। यह देख के सबसे बड़े बांध के रूप में मशहूर है।

हाफलांग, असम

असम में हाफलांग, गुवाहाटी से 310 किमी दूर स्थित है। यह हिल स्टेशन अपनी खूबसूरत पहाड़ियों, स्वच्छ और शांत वातावरण और घाटियों के लिए जाना जाता है। प्रकृति प्रेमियों के बीच हाफलांग काफी लोकप्रिय है। यह हिल स्टेशन समुद्र तल से 680 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है और छुट्टियाँ मनाने के लिए आदर्श है। यहां आप हाफलांग झील बोटिंग कर सकते हैं और माईबोंग के खंडहरों की यात्रा कर सकते हैं। यहाँ ऑर्किड गार्डन, बोरेल रेंज या

जटिंगा काफी प्रसिद्ध पर्यटक स्थल हैं।

कन्नूर, केरल

केरल के मालाबार तट पर स्थित, कन्नूर, भारत के सबसे लोकप्रिय हिल स्टेशन में से एक है। कुन्नूर, ऊटी से सिर्फ 19 किमी की दूरी पर स्थित है और पश्चिमी घाट का दूसरा सबसे बड़ा हिल स्टेशन है। समुद्र तटों, चाय के बागानों, स्मारकों, प्राचीन मंदिरों और पिकनिक स्पॉट जैसे दर्शनीय विकल्पों के देरों से घिरा यह केरल का एक सुंदर शहर है। कुन्नूर नीलगिरि पहाड़ियों और कैथरीन वाटरफॉल के शानदार नजारों के लिए जाना जाता है। यहाँ सालभर मौसम सर्द रहता है जिसके कारण गर्मियों में यहाँ बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं।

- यंगस्टर ब्यूरो

Vol. 16 No. 3

RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; Printer: Ramesh Chander Dogra; Printed at: Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5

Editor: Bal Krishna Mishra responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

Sub Editor: Karan Singh